कौन ठगवा नगरीय लूटल हो

कौन ठगवा नगरिया लूटल हो
कौन ठगवा नगरिया लूटल हो ||

चन्दन काठ के बनल खटोला,
ता पर दुलहिन सूतल हो,
कौन ठगवा नगरिया लूटल हो |

उठो सखी री मांग संवारो,
दूल्हा मोसे रूठल हो,
कौन ठगवा नगरिया लूटल हो |

आये जमराजा पलंग चढ़ी बैठा,
नैनन अंसुआ छूटल हो,
कौन ठगवा नगरीय लूटल हो |

चार जने मिल खाट उठायी,
चहुँ दिस भम भम उठल हो,
कौन ठगवा नगरिया लूटल हो |

कहत कबीर सुनो भाई साधो,
जग से नाता छूटल हो,
कौन ठगवा नगरिया लूटल हो |

रचयिता - कबीर दास

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/1196/title/kaun-thagwa-nagariya-lutal-ho-by-kabir-das

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |